मार्च २०१३

क़ीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

निश्चय पहुँचाए ध्येय तक

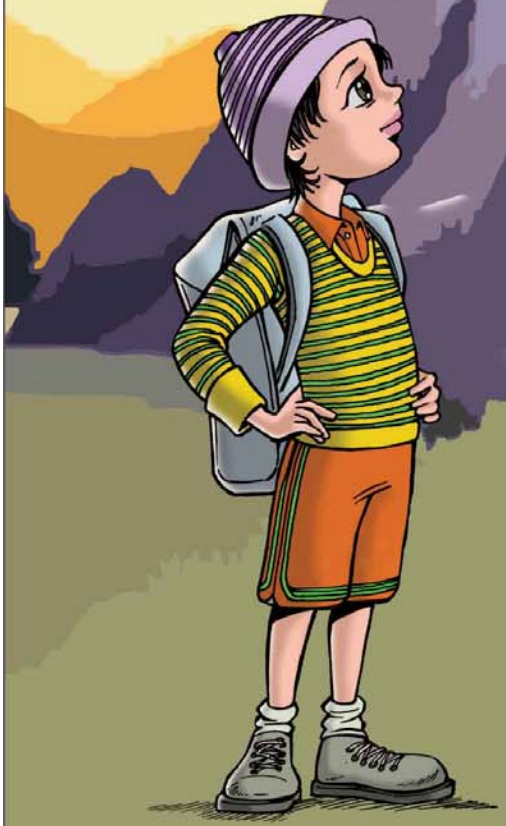

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रो,

कई बार हम तय करते हैं कि इस बार परीक्षा में फर्स्ट क्लास लाना ही है, स्पॉर्ट्स में कप जीतना ही है वगैरह, वगैरह। लेकिन मुश्किल लगते ही उस विचार को छोड़ देते हैं कि, "जाने दो, हमसे हो पाए ऐसा नहीं है" और हार मानकर बैठ जाते हैं। कभी सोचा है कि ध्येय तक पहुँचने के लिए क्या ज़रूरी है? डगमगाते ध्येय को कैसे स्ट्रोंग करें? मुश्किल लगे फिर भी ध्येय को कैसे पकड़े रखें?

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने किसी भी ध्येय तक पहुँचने के लिए निश्चय का महत्व बताया है। निश्चय की कमज़ोरियों को कैसे पहचानें, उन्हें कैसे दूर करें, हताश होने के बजाय कैसा भाव रखना है? वगैरह की सुंदर समझ इस अंक में दी है।

तो आओ, हम "निश्चय" के बारे में सुंदर बातें समझें और ध्येय तक पहुँचने की शक्तियाँ प्राप्त करें।

- डिम्पल मेहता

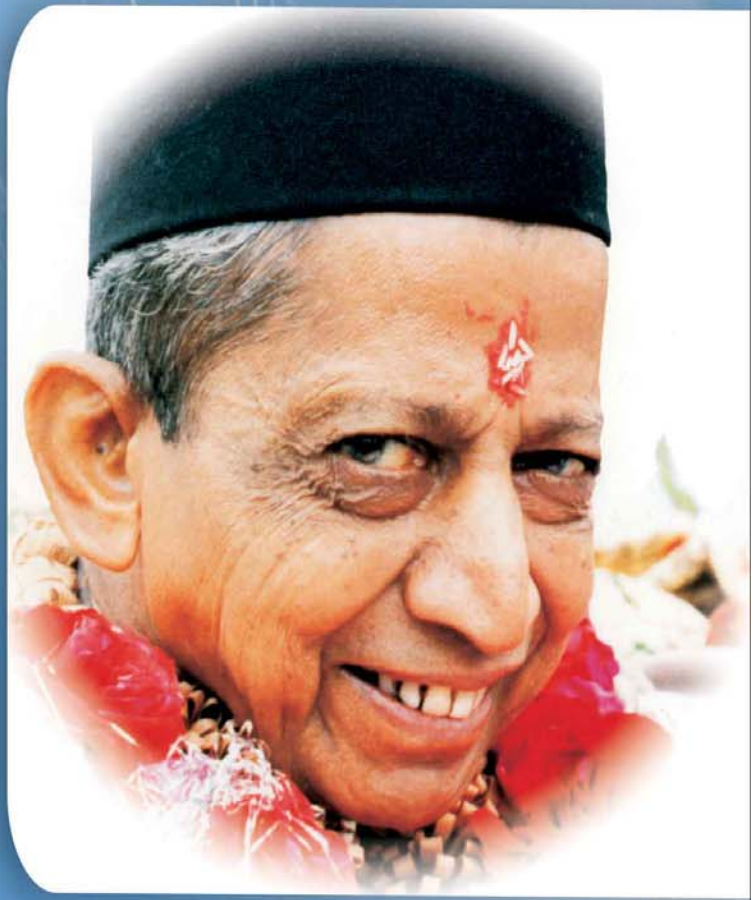

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं..... ३
निश्चय की शक्ति.... ४
यह तो नई ही बात है !... ८
.....और प्रीशा पार उतरी १०
अपने आपको परीक्षण करके देखो! १३
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १४
चलो खेलें..... १६
मीठी यादें..... १८
पज़ल के जवाब और फोटो..... १९

निश्चय पहुँचाए ध्येय तक

दादाजी कहते हैं...

निश्चय मतलब अपना ध्येय। ध्येय की तरफ ले जानेवाला साधन है। जो विचार हमें आए उसका निश्चय करना कि "ऐसा ही करना है अब" तो वह तुरंत ही फलीभूत होगा। तुम उस विचार पर स्ट्रोंग निश्चय करो, एक स्ट्रोंग डिसिज़न लो कि "मुझे ऐसा ही करना है अब और कुछ नहीं।" तो वह पूरा होगा, उसका रास्ता मिल ही जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कहीं सभी के निश्चय फलीभूत नहीं होते।

दादाश्री : वह फलीभूत हो या नहीं, यह हमें नहीं देखना है, हमें निश्चय करना है! अगर निश्चय नहीं करोगे तो कोई भी काम नहीं हो पाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह बात सही है।

दादाश्री : अपना निश्चय हो तो कोई रोकनेवाला है ही नहीं। डग-मगाने की ज़रूरत नहीं है। एक मील तक ढलान हो और मन में लगे कि "फिसल जाएँगे तो?" तो फिर उसका उपाय नहीं है। "नहीं फिसलूँगा, क्यों फिसलूँगा?" ऐसा निश्चय चाहिए। तो पैर उसी तरह चलेंगे, मन आदि सब सीधे रहेंगे। "क्यों फिसलेंगे?" कहा, ऐसा निश्चय किया तो सबकुछ ठीक! फिर भी अगर फिसल पड़े तो जो हुआ वह सही।

प्रश्नकर्ता : मेरी इच्छा है फिर भी काम पूरा करने में तकलीफ आती है।

दादाश्री : यदि अपना भाव स्ट्रोंग होगा तो अंतराय टूट जाएँगे। भीतर अपना भाव स्ट्रोंग है? यह देख लेना। निश्चय करोगे तो हो जाएगा। तुम निश्चय करो कि "मुझे यह करना है", तो सबकुछ हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : मतलब दादा निश्चय में अंतराय तोड़ने की शक्ति है?

दादाश्री : हाँ, सभी अंतराय तोड़ दे। कोई अंतराय पड़ने न दे।

प्रश्नकर्ता : तब तो जो अंतराय बाधक हैं, वह निश्चय की कमी है?

दादाश्री : निश्चय की ही कमी है। यदि निश्चयबल हो तो अंतराय टूट ही जाते हैं। निश्चय करने के बावजूद भी यदि कमज़ोर पड़ जाओ तो बार-बार निश्चय करना, लेकिन "यह मुझसे नहीं हो पाएगा", ऐसा कभी मत बोलना। ऐसा बोलने से तो सब बिगड़ जाता है।

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ११
अखंड क्रमांक : ११
मार्च २०१३

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published by :

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by :

Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at :
Amba Offset

Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation:
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

.....और प्रीशा पार उतरी

रसोई में से मम्मी को प्रीशा के हँसने की आवाज़ आई। रसोई में जाकर देखा तो प्रीशा ने फ्रीज़ पर कुल्लू-मनाली के फोटो चिपकाए थे। हँसकर मम्मी ने पूछा,"यह क्या? आज तो हमारी बिटिया डेकोरेशन के मूड में है या फिर इन फोटो का कुछ और मतलब है?"

"मम्मी इन गर्मियो में मेरी सहेलियाँ कुल्लू-मनाली की ट्रैकिंग पर जा रहीं हैं। मुझे भी जाना है। तीन महीने में रजिस्ट्रेशन करवाना है। मुझे भी जाना है। प्लीज़ मम्मी, मुझे जाने दोगी?" मम्मी को ब्रोशर (विवरण पुस्तिका) देते हुए प्रीशा ने पूछा। मम्मी ने ब्रोशर के कुछ पन्ने पलटे और फिर उसे डाइनिंग टेबल पर रख दिया।

"है तो अच्छा, पर मुझे डैडी से पूछना पड़ेगा" ऐसा कहकर मम्मी ने घड़ी की तरफ देखा, "चल अब, जल्दी कर। तुझे स्कूल जाने में देर हो जाएगी। हम शाम को बात करेंगे।"

शाम को स्कूल से आकर प्रीशा ने बैग सोफे पर फेंका और दौड़कर मम्मी के पास रसोई में गई।

"आपने क्या तय किया? मैं ट्रैकिंग पर जा सकती हूँ?" प्रीशा ने उत्सुकता से पूछा। मम्मी, प्रीशा के सामने देखकर धीरे से हँसी और फिर शांति से कहा, "जा सकती है, यदि तेरी जाने की पूरी तैयारी हो तो।"

"तैयारी? कैसी तैयारी?!" प्रीशा ने अधीर होकर पूछा।

"सिन्सियरली पढ़कर फाइनल परीक्षा में गणित में ७०% से ऊपर लाने की तैयारी। यदि ७० से अधिक मार्क्स आएँगे तो तुझे जाने मिलेगा।" मम्मी ने दृढ़ता से प्रीशा को जवाब दिया। यह सुनकर प्रीशा अपसेट हो गई "क्या? ऐसा नहीं चलता। आपको मालूम है कि गणित में मेरे मुश्किल से पासिंग मार्क्स आते हैं। ७०% मार्क्स लाना मेरे लिए असंभव है।"

प्रीशा की बात सुनकर मम्मी ने उसे हिम्मत बँधाते हुए कहा,"असंभव कुछ होता ही नहीं। यदि तुझे सचमुच पिक्निक जाना ही है तो तू ला सकती है।"

तभी फोन की घंटी बजी। फोन स्नेहा का था। उसने उत्सुकता से प्रीशा से पूछा, "क्या हुआ? ट्रैकिंग पर जाने की पर्मीशन मिली या नहीं।"

सिर खुजलाते हुए प्रीशा बोली, "हाँ भी और ना भी। "ऐसा कहकर उसने विस्तार से मम्मी डैडी की शर्त के बारे में बताया।

यह सुनकर स्नेहा बोली, "अरे यार, जाएँगे ही। तू हाँ, ना मत कर। तू तय कर कि तुझे जाना ही है और ७० मार्क्स लाने ही हैं, तो काम हो सकता है। सच कह रहीं हूँ।"

स्नेहा की बात से प्रीशा को कोई दिलासा नहीं मिला, "चल, मैं फोन रखती हूँ। होम वर्क करना है" ऐसा कहकर स्नेहा की बात काटते हुए उसने फोन रख दिया। थोड़ी देर के बाद मम्मी प्रीशा के रूम में गईं। पलंग पर लेटकर प्रीशा अपनी नोटबुक में कुछ लिख रही थी।

"गरमागरम समोसे और गुलाबजामुन!" की प्लेट टेबल पर रखते हुए मम्मी बोलीं, होमवर्क करते-करते भूख लगी होगी न?" प्रीशा की बुक में मम्मी ने देखा तो पूरे पन्ने पर चित्र ही बनाए हुए थे, गणित का एक भी सवाल हल नहीं किया था।

आश्चर्य से मम्मी ने पूछा, "यह क्या, तुने अभी तक होमवर्क शुरू भी नहीं किया?" "कितने मुश्किल सवाल हैं। मेरे भेजे में तो कुछ उतरता ही नहीं। यह होमवर्क तो कभी भी पूरा नहीं होगा", निराश होकर प्रीशा बोली।

मम्मी प्रीशा के पास बैठीं। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोलीं, बेटा, मुझे पता है कि तुझे अभी कैसा लग रहा है। लेकिन "मुझसे नहीं होता, नहीं होता" ऐसा कभी नहीं बोलते।

मैं तुझे अपने बारे में बतातीं हूँ, मुझे समोसे और गुलाबजामुन बनाना नहीं आता था। लेकिन तेरी और डैडी की, यह फेवरिट आइटम थी। इसलिए दादी से मैंने ये बनाने का तरीका समझ लिया। पहले तो मुझे लगा कि यह बहुत मुश्किल है। लेकिन "अच्छे बनाने ही

निश्चय की शक्ति

रविवार की सुबह थी। दादाजी बालकनी में झूले पर बैठकर, अखबार और गरमा गरम चाय के साथ सुबह का मज़ा ले रहे थे।

दादाजी के पास बैठकर अमन बड़े रुचि से कुछ पढ़ने लगा।

मेरा भविष्य पढ़ रहा हूँ। बुधवार का भविष्य तो बिल्कुल बकवास है। बुधवार को मेरा साइन्स का टेस्ट है। इस बार फिर टेस्ट में गड़बड़ होगी।

तुझे साइन्स के टेस्ट में अच्छे मार्क्स लाने हैं?

लाने तो हैं। पर अब कोई चान्स नहीं दिखता है।

यह भविष्यवाणी तेरा रिज़ल्ट नहीं तय करती। "अच्छे मार्क्स लाने ही हैं", ऐसा यदि तू पक्का निश्चय करेगा तो तुझे कोई नहीं रोक सकता। यह भविष्यवाणी भी नहीं।

मैं ट्राई तो करूँगा, लेकिन पता नहीं, ठीक से पढ़ पाऊँगा या नहीं। यह पढ़कर तो मेरा मूड ही खराब हो गया।

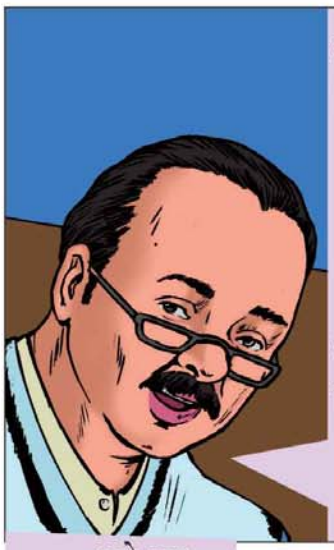

हो पाएगा या नही ऐसा सोचेगा तो सच में सब बिगड़ ही जाएगा। "होगा ही, क्यों नहीं होगा", ऐसा पक्का निश्चय करेगा तो अच्छे मार्क्स आएँगे ही। तू निश्चय कर कि मुझे यह करना ही है। तो सब हो सकेगा।

मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ। यह कहानी है महर्षि पाणिनी की। उन्होंने संस्कृत व्याकरण का महान ग्रंथ -'अष्टाध्यायी' लिखा था। संस्कृत भाषा का पूरा व्याकरण उन्होंने इस छोटी सी पुस्तक में डाल दिया। कितने बुद्धिशाली होंगे!

तुझे यह जानकर आश्चर्य होगा कि संस्कृत के ऐसे पंडित की बुद्धि बचपन में ज़रा-सी भी विकसित नहीं थी। कक्षा में गुरुजी जो पढ़ाते, वह उसके दिमाग में बैठता ही नहीं था।

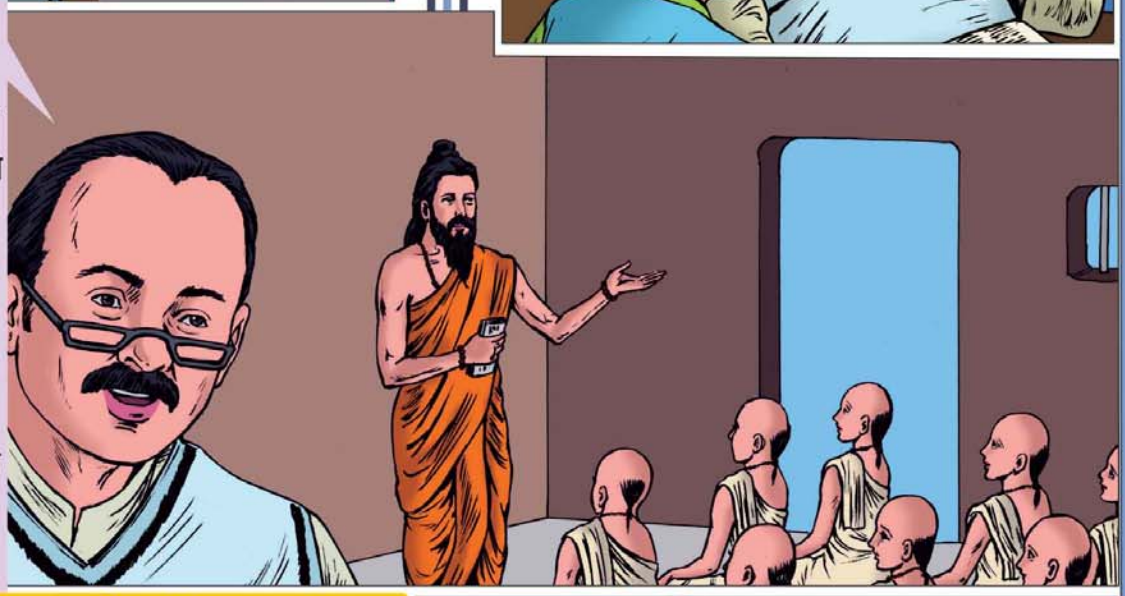

इसलिए सभी सहाध्यायी 'मूर्ख का सरदार' कहकर उनका मज़ाक उड़ाते रहते थे।

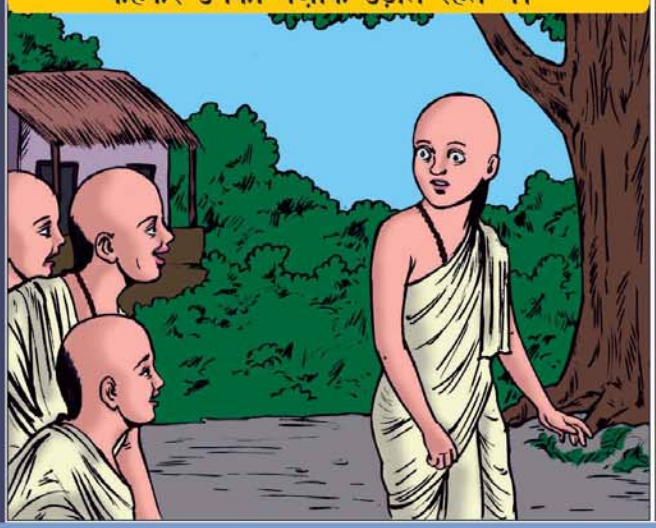

एक दिन,

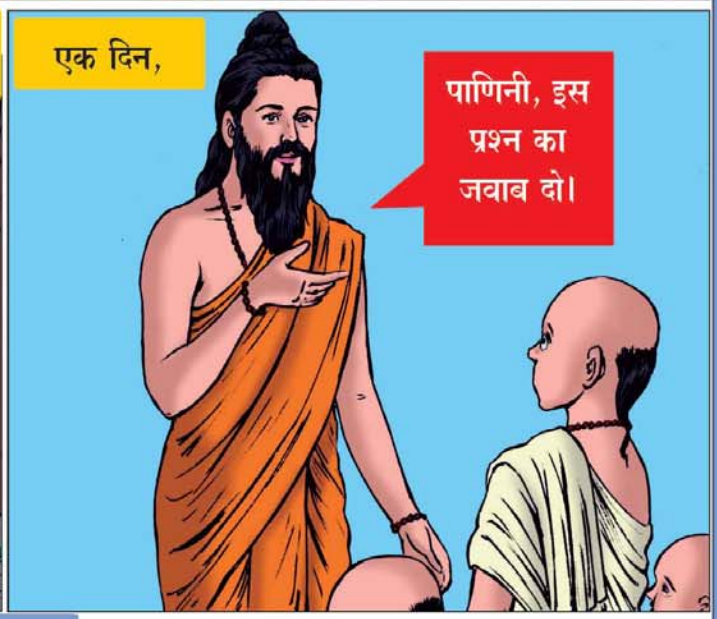

पाणिनी गुरूजी के सामने देखते ही रहे। गुरुजी को खूब गुस्सा आया।

तेरी हथेली मेरे सामने रख।

पाणिनी काँपने लगे। डरते हुए उन्होंने मुट्ठी खोलकर हथेली गुरुजी के सामने रखी! गुरुजी हथेली पर छड़ी से मारने ही जा रहे थे, कि उनकी नज़र हथेली पर पड़ी और वे चोंक गए। छड़ी उनके हाथ में ही रुक गई।

जा बेटा, तेरी जगह पर जाकर बैठ जा।

गुरुजी क्या हुआ?

अरे, तुझे विद्या कैसे आए? तेरे हाथ में तो विद्या की रेखा है ही नहीं!

गुरुजी के इन शब्दों से छोटे से बालक के हृदय पर बहुत बड़ा आघात लगा।

गुरुजी, आपका हाथ बताइए न? विद्या की रेखा कहाँ होती है? यह तो बताओ।

गुरुजी ने अपनी हथेली खोली और उसमें विद्या की रेखा उसे बताई।

उस रात उसने एक धारदार पत्थर से अपने कोमल हाथ पर एक रेखा बना दी। वह विद्या की रेखा थी। उसकी हथेली खून से लथपथ हो गई।

अब तो मेरे हाथ में विद्या की रेखा है। अब मुझे सब आने लगेगा।

दूसरे दिन

गुरुजी, देखिए मैंने मेरी हथेली पर विद्या की रेखा खींच ली है। अब विद्या प्राप्त करने में मुझे कोई नहीं रोक सकता।

अरे बेटा, यह तूने क्या किया? परंतु अब, सचमुच विद्या प्राप्त करने से तुझे कोई नहीं रोक सकता।

समय के साथ सफेद रेखा अदृश्य हो गई और उनका हाथ पहले जैसा ही हो गया। परंतु उनके हृदय में दृढ निश्चय की जो रेखा खींची थी वह तो समय के साथ और भी अधिक गहरी होती गई। जब तक वह अपना पाठ ठीक से न समझ लें, तब तक खाना-पीना सोना सब बंद हो जाता। ध्येय प्राप्ति के लिए, उनके ऐसे दृढ निश्चय के कारण, एक समय 'मूर्ख का सरदार' कहलानेवाला संस्कृत भाषा का महान व्याकरण शास्त्री बन गया।

अब तू ही बता, यदि पाणिनी हाथ की रेखा के सहारे बैठे रहते, तो क्या वे अपने ध्येय तक पहुँच सकते थे?

नहीं।

तभी पापा बालकनी में आए।

तो अमनसेठ, तुम्हारा भविष्य क्या कह रहा है?

मेरा भविष्य तो भयंकर है। पर मैं अपने निश्चय बल से उसे सुंदर बना दूँगा।

क्या?

यह सुनकर, दादाजी धीरे से हँसे और फिर चश्मा पहनकर अखबार पढ़ने लगे।

यह तो नई

निश्चय उसे कहेंगे कि हमने जो तय किया, वह अंत तक रहे। तो फिर उसका रास्ता आगे मिल जाएगा। निश्चय बदल दोगे तो आगे रास्ता नहीं मिलेगा। जैसे कि "मुझे डॉक्टर बनना ही है", ऐसा तय किया हो तो डॉक्टर बनने के सभी संयोग मिल आएँगे। पर यदि बाद में बदल दिया कि अब मुझे डॉक्टर नहीं बनना तो डॉक्टर बनने के संयोग खत्म हो जाएँगे।

एक निश्चय करके फिर दूसरा करोगे तो वह मिलेगा तो सही, लेकिन अविरत नहीं मिलेगा। उदा. कोई तय करे कि मुझे पढ़ना ही है, तो लगातार पढ़ने के संयोग मिलते रहेंगे। पर बीच-बीच में फिर दूसरा निश्चय करे कि खेलना तो चाहिए न! पूरा दिन पढ़ते नहीं रहना है, तो पढ़ने के संयोग अविरत नहीं मिलेंगे।

ही बात है!

सँकरी पट्टी पर चलना हो और उसकी दोनों तरफ समुद्र हो तब कैसा निश्चय करते हैं? वहाँ निश्चय बार-बार नहीं करना पड़ता। उस समय तो अंदर पक्का निश्चय हो ही जाता है। फिर निरंतर जागृति रहती है! ऐसा निश्चय चाहिए।

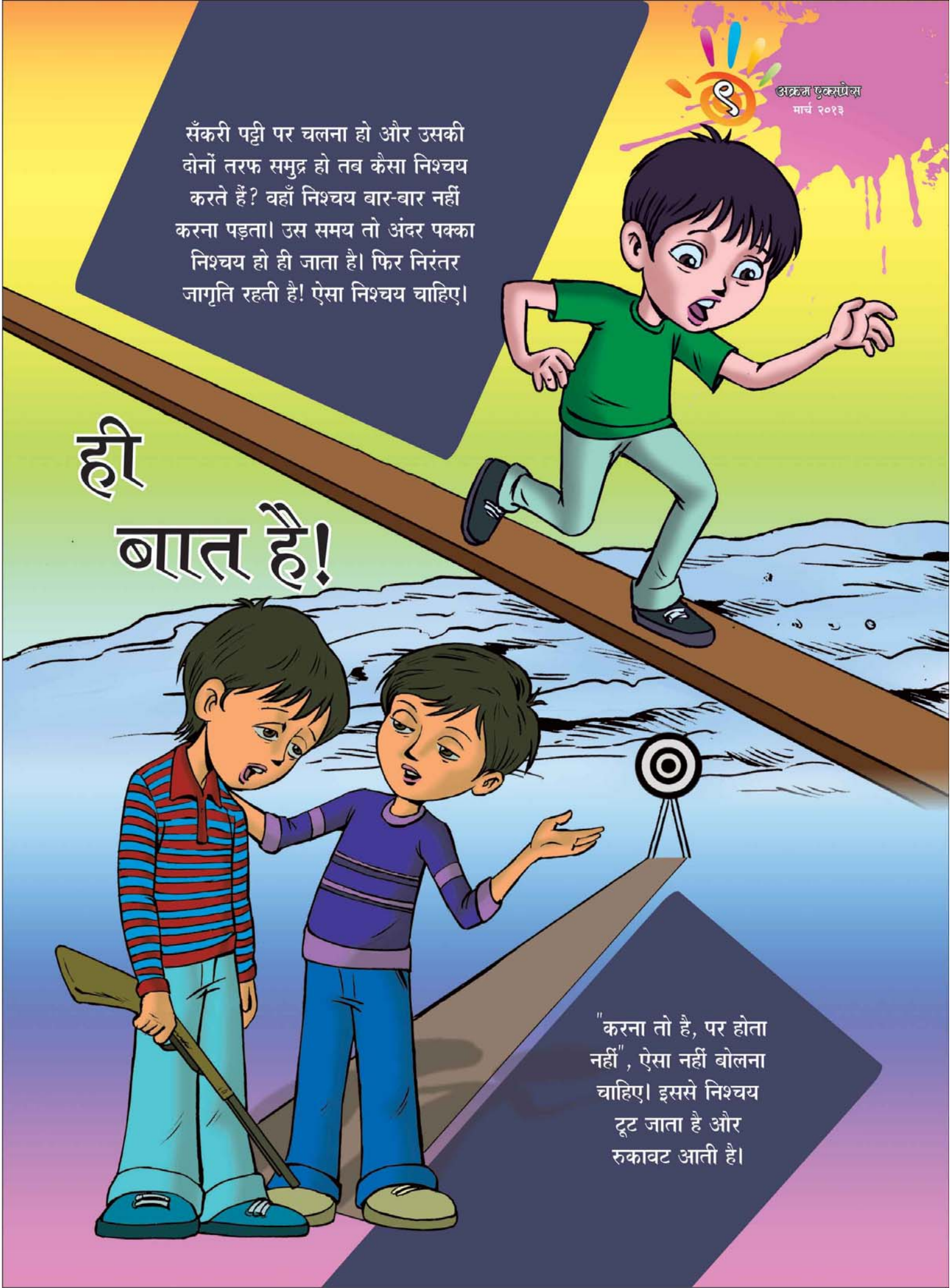

"करना तो है, पर होता नहीं", ऐसा नहीं बोलना चाहिए। इससे निश्चय टूट जाता है और रुकावट आती है।

हैं" ऐसा निश्चय किया और प्रैक्टिस करने लगी और प्रैक्टिस करते-करते मुझे एकदम टेस्टी बनाना आ भी गया। यदि मैं, "मुझसे नहीं होगा" ऐसा कहकर बैठ गई होती, तो तुझे ऐसा टेस्टी खाने मिलता? "मुझसे नहीं होता, नहीं होता" ऐसे बोलते रहने से अपनी सभी शक्तियाँ टूट जातीं हैं। इसके बजाय स्ट्रोंग निश्चय करके काम करना शुरू कर दें तो सब हो जाता है।" "चल थोड़ा खा ले और होमवर्क शुरू कर दे", कहकर मम्मी रूम से चलीं गईं।

एक समोसा खाकर प्रीशा ने अपनी गणित की नोटबुक के सामने देखा। ज़बरदस्ती उसने सवाल हल करना शुरू किया। थोड़ी मेहनत के बाद उसे खुद ही आश्चर्य हुआ कि वह सवाल हल कर पाई। "अरे वाह! यह सवाल आसान तो नहीं था फिर भी मुझे आ गया। वाह! प्रीशा वाह!" वह खुद को ही प्रोत्साहन देते हुए बोली।

लेकिन थोड़ी देर बाद वह फिर अटक गई। फिर उसे विचार आया, "मुझे मालूम है कि गणित मेरे बस की बात नहीं है।" पर यह विचार आते ही मम्मी के शब्द उसके कानों में गूँजने लगे, "निश्चय करने पर भी यदि कमज़ोर पड़ जाओ तो बार-बार निश्चय करना। पर यह मुझसे नहीं होगा ऐसा बोलना ही मत" और उसने अपनी सोच बदल दी। देखते-देखते उसका होमवर्क हो भी गया।

उस दिन से, ७०% लाने ही हैं। ऐसे स्ट्रोंग निश्चय से प्रीशा ने रोज़ नियम से गणित की प्रैक्टिस करना शुरू किया। उसे कई बार मुश्किल भी लगता पर हिम्मत हारे बिना वह प्रैक्टिस करती ही रहती।

अंत में गणित की परीक्षा का दिन आ गया। परीक्षा में जाने से पहले, आर्शीवाद लेने के लिए उसने मम्मी-डैडी के पैर छूए, मम्मी ने उसे एक लिफाफा दिया।

"यह क्या है?" प्रीशा ने आश्चर्य से पूछा।

"कुल्लू-मनाली जाने का रजिस्ट्रेशन फॉर्म और चेक", मम्मी खुश थीं।

"पर मम्मी, आज तो परीक्षा है। अभी मेरा रिज़ल्ट कहाँ आया है?" प्रीशा ने आश्चर्य से कहा।

"हमारी परीक्षा में तू पास हो गई। ध्येय तक पहुँचने के लिए जो स्ट्रोंग निश्चय करके मेहनत की, उसमें हमने तुझे ७०% से अधिक मार्क्स दे दिए हैं", मम्मी ने हँसते हुए कहा। यह सुनकर प्रीशा मम्मी के गले लग गई। लिफाफे को बैग में सँभालकर रखा और पूरे विश्वास के साथ परीक्षा देने गई।

और सचमुच ही गणित में उसे ७५ मार्क्स आए!

"निश्चय करने पर भी यदि कमज़ोर पड़ जाओ तो बार-बार निश्चय करना।"

अपने आप को परखकर देखो!

१. दादाजी कहते हैं कि निश्चय मतलब ध्येय की ओर ले जानेवाला साधन। नीचे दी गई घटना का ध्यान से निरिक्षण करके खोजो कि देवयानी का ध्येय क्या था और उस ध्येय तक पहुँचने के लिए उसने खुद ही कैसे उसमें रुकावटें डालीं।

इन्टरस्कूल स्पेलिंग कॉम्पिटिशन में भाग लेने के लिए देवयानी का सिलेक्शन हुआ। स्कूल के लिए प्राइज़ जीतना, देवयानी का जो सपना था, वह साकार करने का आज उसे मौका मिला।

घर जाकर देवायानी ने कॉम्पिटिशन के लिए प्रैक्टिस करने का टाइम-टेबल बनाया और सिन्सियरली पढ़ना है, ऐसा उसने तय किया। तभी उसकी कज़िन शिवानी का फोन आया।

"देवू, फ्राइडे पिक्चर देखने चलें? मुझे टिकट मिलीं हैं।" शिवानी ने पूछा।

देवयानी ने सोचा, “हमममम....फ्राइडे पिक्चर देख आऊँ। शनिवार को थोड़ी ज्यादा प्रैक्टिस कर लूँगी।"

जैसे कॉम्पिटिशन का दिन नज़दीक आने लगा, वैसे देवयानी का कॉन्फिडन्स कम होने लगा। एक रफ टेस्ट में उसके दस में से ६ स्पेलिंग गलत निकलीं। वह निराश हो गई।

उसने सोचा, "मुझे स्पेलिंग कॉम्पिटिशन में भाग नहीं लेना। उसमें जीतने का तो कोई चान्स ही नहीं है। इसकी जगह मैं आर्ट कॉम्पिटिशन में भाग लूँ तो कैसा?"

थोड़ी देर बाद देवयानी ने फिर अपना विचार बदल दिया और प्रैक्टिस करने लगी। कॉम्पिटिशन से पहले रात को उसे खूब घबराहट होने लगी, "मुझे यह स्पेलिंग समझ में नहीं आ रही। मुझे नहीं आएगा तो?”

(२) १. ऊपर दिए गए प्रसंग में से कौन-से ३ वाक्य निश्चय की कमी बताते हैं, वह लिखो।
२. नीचे दिए गए पाँच वाक्यों में से वह किस निश्चय शक्ति के द्वारा अपनी डाली हुई रुकावटों को पार कर सकती है?

१. मैं अनंत शक्तिवाला हूँ। दादा, मुझे समझ में आए ऐसी शक्ति दीजिए।

२. मन पोल ढूँढे और ध्येय से विरुद्ध बताए तो स्ट्रोंग निश्चय द्वारा मन की बात नहीं मानना, पर ध्येय के लिए सिन्सियर रहना।

३. पिक्चर देखने में समय बिगाड़ने की जगह, घर लाकर पिक्चर देख लेना।

४. निश्चय उसे कहते हैं कि हमने जो तय किया है उस पर अंत तक कायम रहें। निश्चय बदल दोगे तो आगे रास्ता नहीं मिलेगा।

५. "कॉम्पिटिशन में जीत जाऊँगी" ऐसी कल्पना करके सो जाना।

पिछले अंक में हमने देखा कि सेठ धनावह के घर वसुमती पुत्री की तरह रहने लगी। सेठ का वसुमती के प्रति बढ़ता हुआ स्नेह देखकर सेठानी ईर्ष्या की आग में जलने लगीं। दूसरा कोई उपाय न सूझने पर उन्होंने वसुमती से घर का सारा काम करवाना शुरू कर दिया। सेठानी का दोष देखे बिना वसुमती धर्म ध्यान में रहकर, भगवान का स्मरण करते हुए दिन बीता रही थी। अब आगे पढ़िए.....

ऐतिहासिक

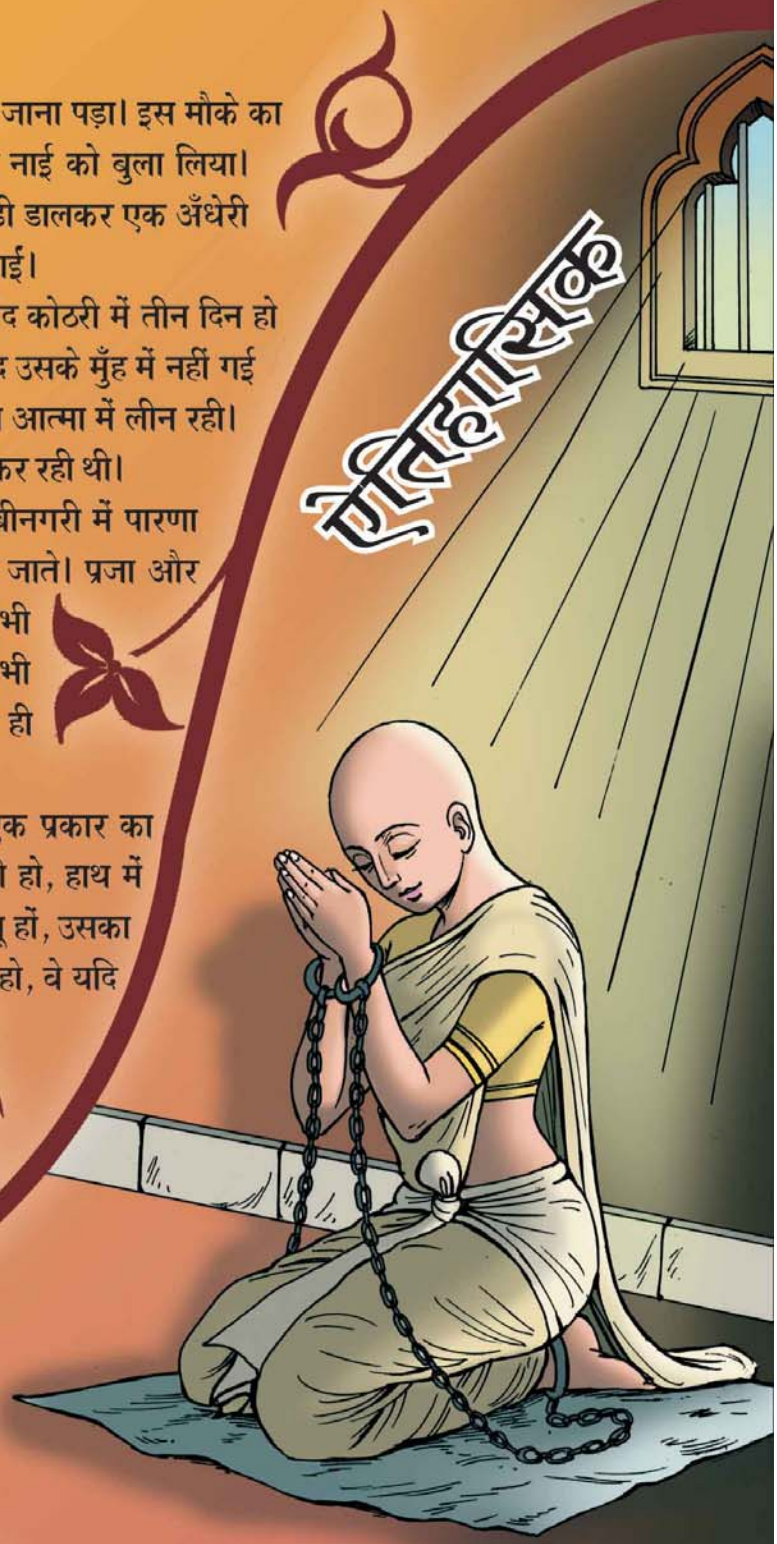

इतने में सेठ धनावह को व्यापार के काम से दूसरे गाँव जाना पड़ा। इस मौके का फायदा उठाकर, मूला सेठानी ने, सेठ के जाने के बाद नाई को बुला लिया। वसुमती के सिर का मुंडन करवा दिया। हाथ-पैरों में बेड़ी डालकर एक अँधेरी कोठरी में बंद कर दिया। घर पर ताला लगाकर वे चलीं गईं।

यह वसुमती वही चंदनबाला थी। चंदनबाला को बंद कोठरी में तीन दिन हो गए थे। खाने का एक भी दाना या पानी की एक भी बूँद उसके मुँह में नहीं गई थी। लगातार नवकार मंत्र का जप करते हुए चंदनबाला आत्मा में लीन रही। जिनेश्वर भगवान की भक्ति में परम शांति का अनुभव कर रही थी।

दूसरी ओर भगवान महावीर छः महीने से कौशाम्बीनगरी में पारणा के लिए गली-गली, घर-घर पधारते और वापस चले जाते। प्रजा और राज घराने में यही चर्चा थी कि क्यों ये तपस्वी कुछ भी लिए बिना वापस चले जाते हैं। महारानी मृगावती भी पारणा के नए-नए तरीके अपनाती, लेकिन कुछ काम ही नहीं बनता।

भगवान का अभिग्रह (नियम पालन करने का एक प्रकार का आग्रह) था कि, राजकुमारी हो, तीन दिन की उपवासी हो, हाथ में उड़द के दाने (बाकड़ा) हों, पैर में बेड़ी हों, आँख में आँसू हों, उसका एक पैर घर की देहलीज़ के बाहर और दूसरा पैर अंदर हो, वे यदि वोहरावे तभी पारणा करना है। इस अभिग्रह को छः महीने होने को आए, पर वह पूरा नहीं हो रहा था।

इस ओर जब सेठ धनावह वापस आए, तब घर पर ताला देखकर पता लगाया। एक वृद्ध दासी से उन्हें सब जानकारी मिली। सेठ ने तुरंत ही घर का ताला तोड़ दिया।

गौरवगाथाएँ

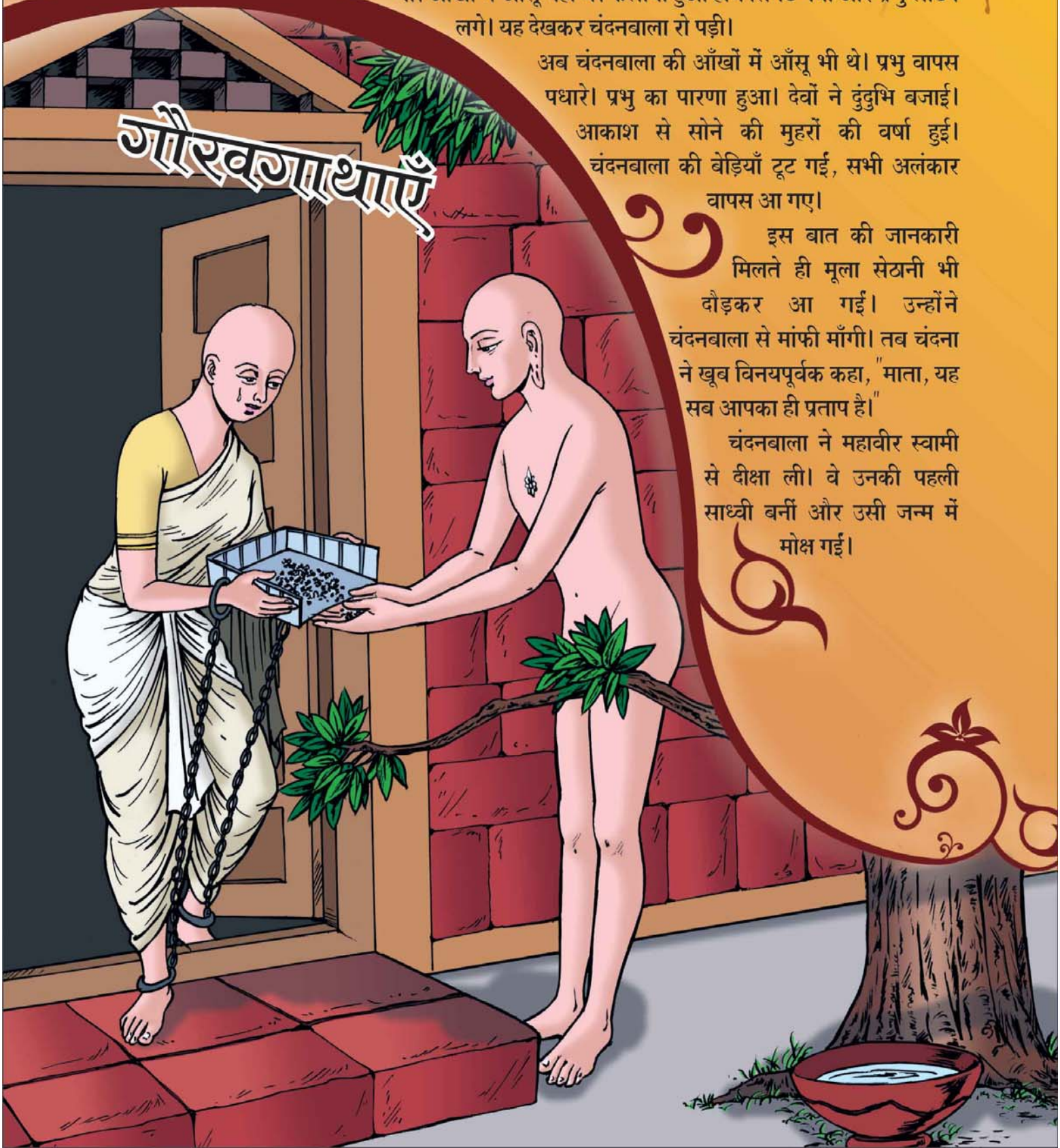

अंदर जाकर चंदनबाला की हालत देखकर सेठ स्तब्ध रह गए। एक सूप में उड़द के दाने रखे थे। उसे वे खाने के लिए देकर सेठ बेड़ी तोड़ने के लिए लुहार को बुलाने गए।

उसी समय प्रभु महावीर वहाँ पधारे। भगवान को देखकर चंदनबाला बहुत ही हर्षित हो गई। अपने अनुकूल अभिग्रह की सभी सामग्री देखकर प्रभु ने वोहरवा हाथ फैलाया, पर देखा तो वोहरनार के चेहरे पर आनंद उमड़ रहा था। आँखों में आँसू नहीं थे। फैलाया हुआ हाथ सिमट गया और प्रभु लौटने लगे। यह देखकर चंदनबाला रो पड़ी।

अब चंदनबाला की आँखों में आँसू भी थे। प्रभु वापस पधारे। प्रभु का पारणा हुआ। देवों ने दुंदुभि बजाई। आकाश से सोने की मुहरों की वर्षा हुई। चंदनबाला की बेड़ियाँ टूट गईं, सभी अलंकार वापस आ गए।

इस बात की जानकारी मिलते ही मूला सेठानी भी दौड़कर आ गईं। उन्होंने चंदनबाला से मांफी माँगी। तब चंदना ने खूब विनयपूर्वक कहा, "माता, यह सब आपका ही प्रताप है।"

चंदनबाला ने महावीर स्वामी से दीक्षा ली। वे उनकी पहली साध्वी बनीं और उसी जन्म में मोक्ष गईं।

चलो खेलें....

१

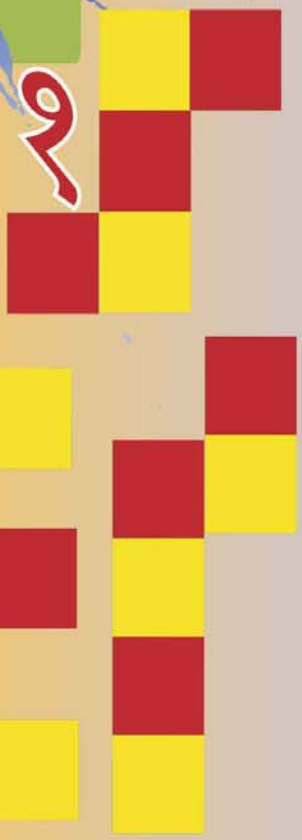

दिए गए अलग-अलग ५ पीस (टुकड़ें) को ५ * ५ के चेस बोर्ड पर सेट करो।

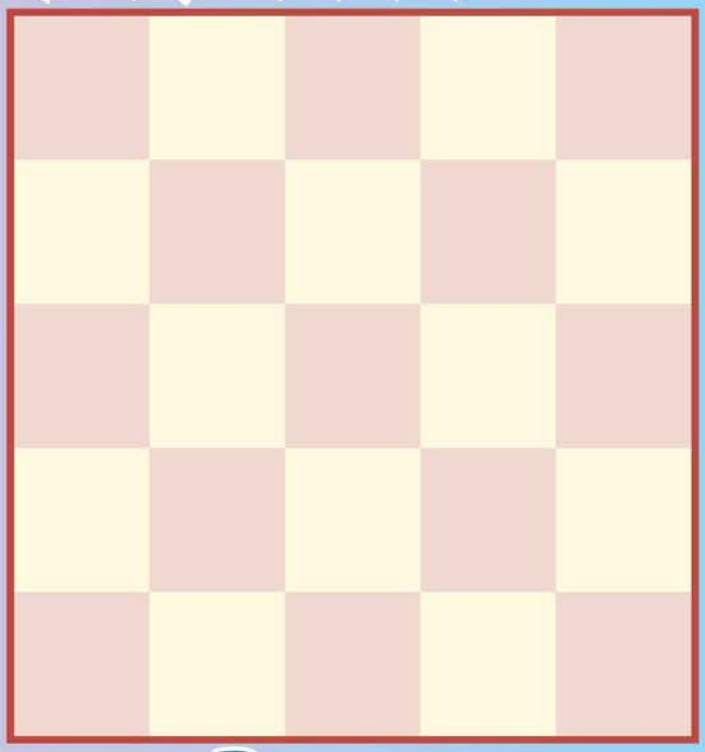

२

पेन्सिल उठाए बिना दी गई १२ आकृतिओं को ५ सीधी लाइन से जोडो।

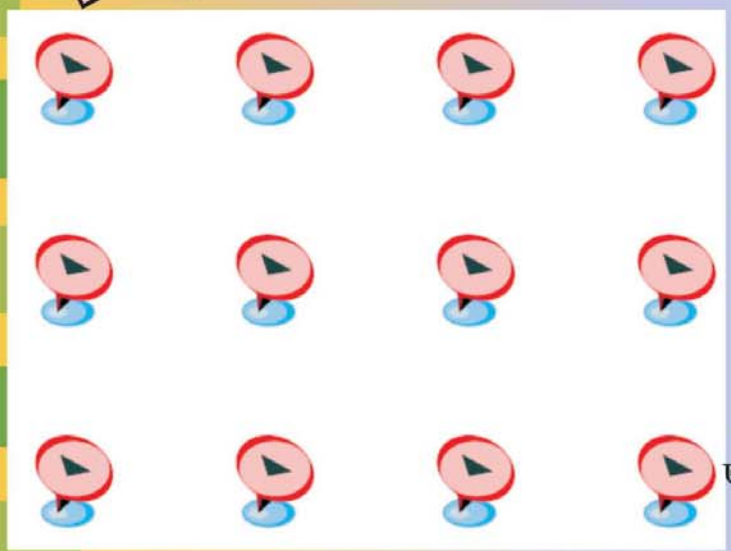

३

दिए गए एक से आठ नंबर के कार्ड को, दो लाइन में रखा गया है। दाहिने लाइन के नंबर का टोटल २० और बायिने लाइन का टोटल १९ आ रहा है। अब हमें कम से कम कार्ड को बदलकर दोनों लाइन का टोटल एक सरीखा लाना है। वह कैसे कर सकेंगे?

४ दिए गए चित्र में कितने पंजे हैं, उसे गिनो।

५ बिंदुओं को जोड़कर चित्र बनाओ।

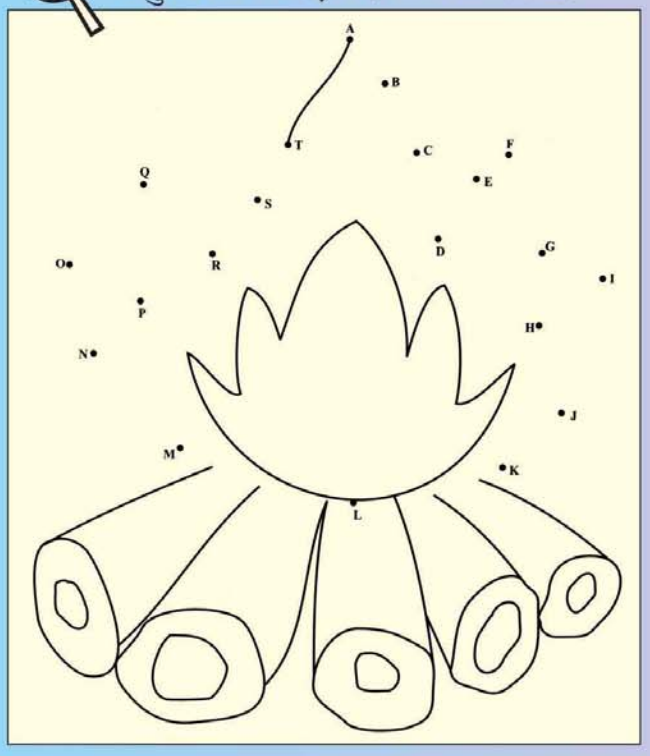

६ दिए गए चित्रों को घटनाक्रम अनुसार नंबर दो।

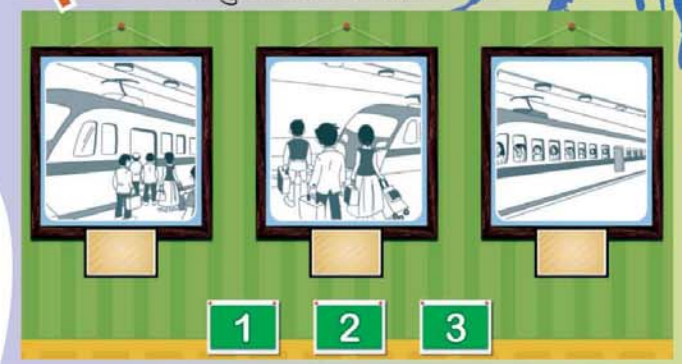

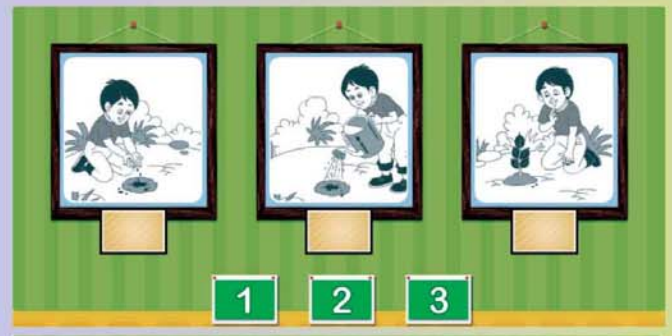

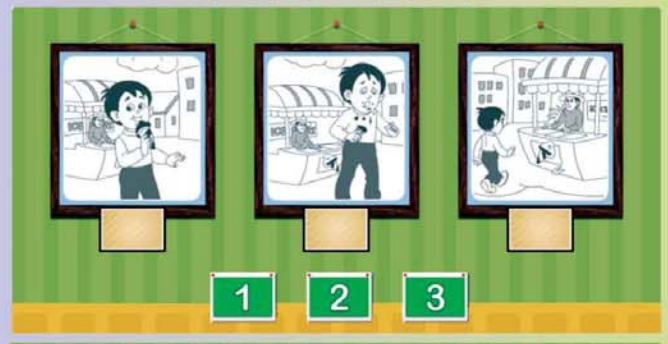

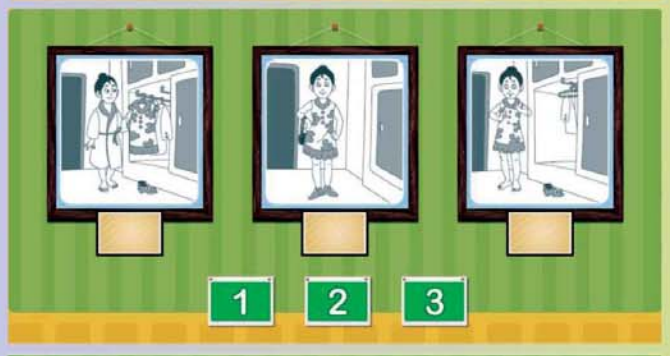

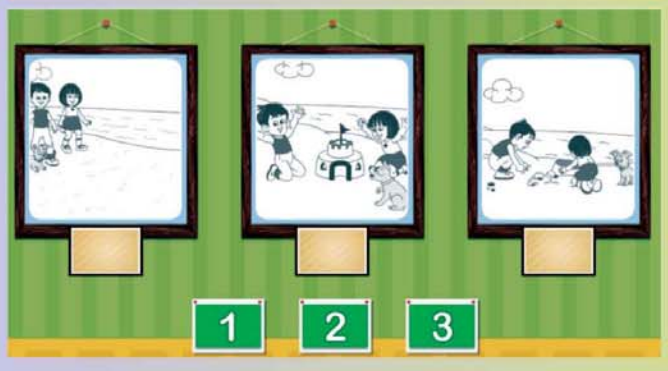

मीठी यादें

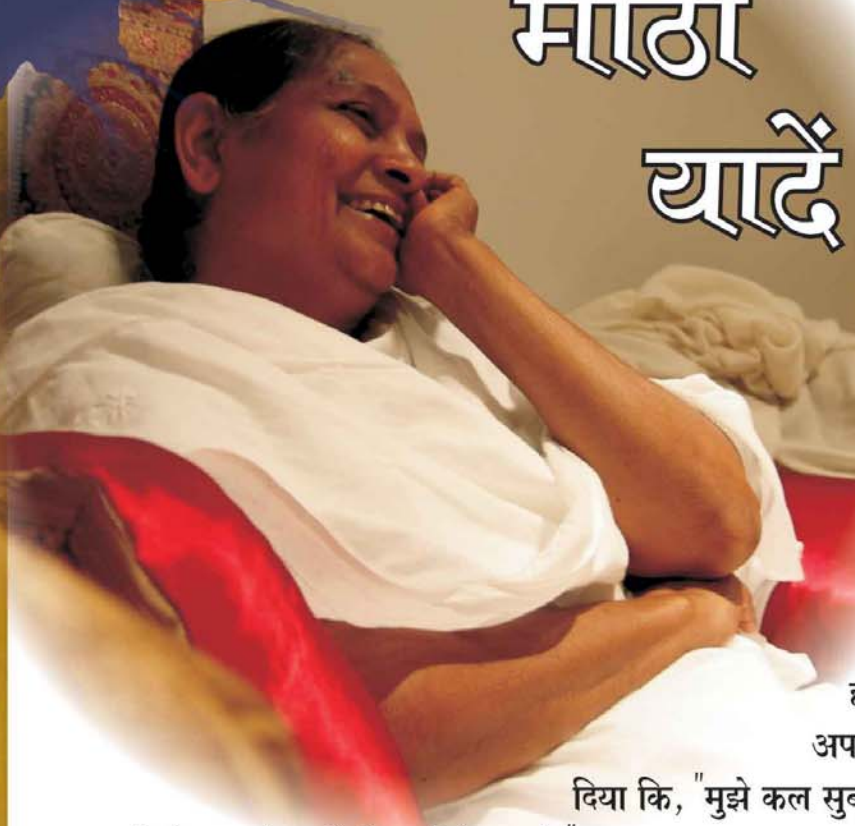

यह एक यात्रा में हुई घटना है। एक धर्मशाला में सभी ठहरे थे। सभी रात को उस धर्मशाला में पहुँचे। खाने के बाद नीरू माँ सभी महात्माओं के साथ बैठे थे। एक बहन नीरु माँ के पास आकर बैठ गईं। उन्हें सेवा करना बहुत अच्छा लगता था, यह नीरू माँ जानतीं थीं। इसलिए अंत में दर्शन करते समय नीरू माँ ने उनसे कहा, "कल सुबह मेरे लिए गरम पानी भरकर ले आना।" वे बहन तो एकदम खुश हो गईं।

अपने कमरे में जाकर उन्होंने सबसे कह दिया कि, "मुझे कल सुबह जल्दी उठना है। नीरू माँ के लिए गरम पानी ले जाना है। मुझे नीरू माँ ने कहा है।"

दूसरे दिन सुबह पाँच बजे उठकर वे बहन नीचे पानी भरने गईं। देखा तो पानी के लिए लंबी लाइन लगी हुई थी। गरम पानी लेने के लिए बहुत से लोग आ गए थे। इतनी ज्यादा भीड़ देखकर वह बहन सोचने लगीं कि अब क्या करूँ?

उन्होंने तो सबसे कह दिया कि उन्हें नीरू माँ के लिए गरम पानी ले जाना है। नीरू माँ के लिए ले जाना है, तो कोई कुछ बोलेगा? सभी ने उन्हें जाने दिया और बाल्टी भर दी। वे बहन बहुत खुश हो गईं, बिना कुछ मेहनत किए उन्हें पानी मिल गया।

ऊपर जाकर उन्होंने ज़ोर से नीरू माँ का दरवाज़ा खटखटाया। दीपकभाई बाहर आए और कहा, "नीरू माँ तो सो रहे हैं। यह पानी तुम वापस ले जाओ।" फिर दीपकभाई ने पूछा, "अब आप क्या करोगी इस पानी का?"

उन्होंने कहा, "कुछ नहीं। किसी और को दे दूँगी।"

यह बातें नीरू माँ ने सुनी, तो वे तुरंत उठकर आईं और बोलीं, "नहीं, नहीं मैं नहा लेतीं हूँ। इन्हें वापस मत भेजो।" पानी लेकर नीरू माँ ने बहन से पूछताछ की कि, तुम कितने बजे उठ गईं थीं? तुम कैसे पानी लेने गईं थीं? तुम्हारा नंबर कौन-सा था? वगैरह। बहन ने सरलता से कह दिया, "मैंने तो सबसे कह दिया था कि मुझे नीरू माँ के लिए पानी ले जाना है इसलिए सभी ने मुझे फटाफट आगे जाने दिया।"

यह सुनकर नीरू माँ उन्हें समझाते हुए बोलीं, "इस तरह नीरू माँ का नाम लेकर कभी-भी सेवा मत करना।" बहन को अपनी भूल समझ में आई। हमें ध्यान में भी न आएँ, ऐसी भूलें नीरू माँ खूब प्रेम से दिखाकर समझातीं थीं।

पज़ल के जवाब

अपने आपको परखकर देखो! के जवाब

१) १. हमम्म....फ़ाइडे पिक्चर देख आऊँ। शनिवार को थोड़ी ज्यादा प्रैक्टिस कर लूँगी।
२. मुझे स्पेलिंग कॉम्पिटिशन में भाग नहीं लेना। उसमें जीतने का तो कोई चान्स ही नहीं है। इसकी जगह मैं आर्ट कॉम्पिटिशन में भाग लूँ तो कैसा?
३.मुझे यह स्पेलिंग समझ में नहीं आ रही। मुझे नहीं आएगा तो?
२) १. मैं अनंत शक्तिवाला हूँ। दादा, मुझे समझ में आए ऐसी शक्ति दीजिए।

१

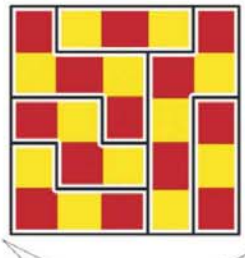

२

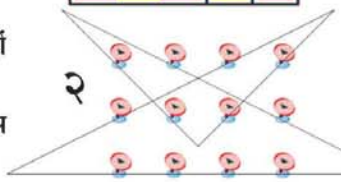

४-५४

३	१	३
	२	४
	७	५
	८	६

६

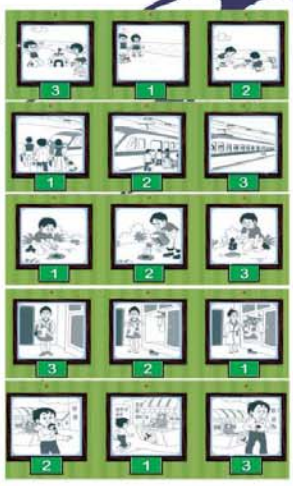

हा...हा...ही...ही...

सेठजी, मुझे तुम्हारे वहाँ नौकरी पर रखोगे?
नहीं भाई, सभी काम मुझे खुद ही करने की आदत है।
नौकर ने कहा : इसीलिए तो मैं तुम्हारे वहाँ नौकरी करना चाहता हूँ!!

हाथी बोला पूरी दुनिया में मेरे जितना शक्तिशाली और बुद्धिमान प्राणी कोई नहीं है। तो तुरंत ही चीटी बोली, "ऐसा है, तो चलो मेरे घर में घूसकर दिखाओ।"

टीचर : चिन्टु, तेरे पापा क्या व्यवसाय करते हैं?
चिन्टु : टीचर, मेरे पापा एच.डी.एफ.सी. के मालिक है।
टीचर : वाह! बहुत अच्छा! लेकिन यह तो बता कि एच.डी.एफ.सी. का मतलब क्या होता है?
चिन्टु : हरीलाल दाबेली एन्ड फरसाण सेन्टर!!

छगन ने पूछा, "डॉक्टर साहब प्लास्टिक सर्जरी के लिए कितने रुपयों का खर्च होगा?"
डॉक्टर ने कहा, "दो लाख रुपयों का।
छगन ने कहा, "और साहब यदि मैं प्लास्टिक अपने घर से ले आऊँतो!"

चिन्टू : ये छोटा मेडल तुम्हें क्यों मिला है?
पिन्टू : गाना गाने के लिए।
चिन्टू : और ये बड़ावाला?
पिन्टू : अपना गाना बंद करने के लिए!!

सरदारजी टी.वी. खरीदने गए।
सरदारजी : "आपके पास कलर टी.वी. है?"
दुकानदार : "बिल्कुल"
सरदारजी : तो मुझे ग्रीन कलर का टी.वी. दीजिए।

Akram Express
March 2013
Year : 1, Issue : 11
Conti. Issue No.:11

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Bade

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 8th of every month

मोरबी त्रिमंदिर में हुए प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव की झलक...

मुख्य तीन भगवान और देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा, प्रक्षाल और पूजन करते हुए पूज्यश्री

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.